JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सीता का चरित्र वर्तमान में हर परिवार की स्त्रियों के लिए प्रासंगिक: रामचरितमानस के संदर्भ में

[1]प्रेमलता उपाध्याय"स्नेह", [2]डॉ अनीता नायक

[1]पी.एच.डी. शोधार्थी (हिंदी विभाग) [2] शोध निर्देशक (विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग)

[1]हिंदी अध्ययनशाला व शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (मध्य प्रदेश)

[2]हिंदी शोध केंद्र-शासकीय ज्ञान चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह (मध्य प्रदेश)

प्रस्तावनाः-

"भार्यैव सीता नहीं राघवस्य, प्रजाऽपि सा प्राप्त समाधि कारा।
सौभाग्य लक्ष्मी रघुवंशिनाम् सा, पौर प्रजानामपि पट्टाराज्ञी"।।[1]

सीता सिर्फ राघव की पत्नी ही नहीं ,अपितु प्रजा भी हैं । उन्हें प्रजा के समान अधिकार प्राप्त हैं । वह रघुवंश की सौभाग्य लक्ष्मी हैं, और संपूर्ण प्रजा की पटरानी हैं।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता"।[2]

जहां नारी की पूजा होती है। वहां देवताओं का निवास होता है। और भारतीय समाज में राम के साथ सीता की सदैव पूजा होती रही है। सीता रामायण काल की मुग्धा नायिका है। वह भारत ही नहीं विश्व की आदर्श महिला है। विश्व का भरण पोषण करने वाली वसुंधरा ने जन्म दिया। राजा जनक उनके पिता हैं। वे सूर्य कुल के राजाओं की पुत्रवधू हैं। सीता एक आदर्श बेटी, आदर्श पत्नी, आदर्श माँ, पतिव्रत की मूर्ति, दुर्भाग्य से प्रताड़ित नारी हैं।

मूल शब्दः- सीता का चरित्र, नारी के गुण, रामचरित मानस, वर्तमान में प्रासंगिकता।

विषयवस्तुः-

सीता का जीवनः- सीता का जन्म "मिथिला " के राजा "जनक", जिनका एक नाम "विदेह" भी था, के यहां पर हुआ था। इसी कारण सीता का नाम "मैथिली" और "वैदेही" भी पड़ा । एक बार मिथिला राज्य में एक बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा था। राजा जनक के गुरु ने उन्हें सलाह दी कि, वे स्वयं वृषभ बनकर रत्न मणियों से जड़ित कि हल को जमीन पर चलाते हुए खींचेंगें, और यज्ञ करेंगे तो दुर्भिक्ष दूर हो सकता है। गुरुवर की आज्ञा से राजा जनक ने वैसा ही किया, और जैसे ही हल की नोक का अग्रभाग जिसे "सीत्" कहते हैं ,जमीन में गया एक दिव्य स्वरूप आयोनिजा कन्या प्रकट हुई। उस कन्या का नाम "सीत्" से उत्पन्न होने के कारण" सीता" रखा गया ।

"हलेन राजंस्त्वथ भूमिकर्षे कृते यतोऽप्रापि सुकन्यकेयम्।
ततो गमिष्यत्यभिधामानर्धां प्रजेश सीतेति च लोक पूताम्"।[3]

सभी का मन हर्ष के अतिरेक से भर गया, और बहुत ही हर्षोल्लास के साथ यज्ञ संपन्न हुआ, तत्पश्चात संपूर्ण राज्य में अतिवृष्टि होने से दुर्भिक्ष दूर हो गया।

जानकी ने बचपन में अपने बाल क्रीडाओं से माता-पिता को अभिभूत किया । सीता नन्हीं सखियों के साथ खेलती थी। कांपते हाथों से चित्र रचना करती थी। बाल सुलभ क्रीड़ाओं से युक्त विविध क्रीडाओं से, युक्त हो सभी को नयनों का लाभ प्रदान करती थी। सीता जी जल संचरण संबंधी क्रीडाएं, माँ से कहानी सुनाने की हट करना, चंद्र प्राप्ति की याचना करना, घास फूस के घरौंदे बनाकर खेलना, गुड्डे गुड़ियों का ब्याह रचाना, सखियों के साथ मिट्टी की चक्की बनाकर झूठ मूठ में पीसने की क्रीडा आदि करना।

एक बार जानकी जी फूलों की गेंद से सखियों के साथ खेल रही थी, तो उनकी गेंद पेड़ की डाली में जाकर फँस गई, तब उन्होंने शिव जी का विशाल धनुष जो कई लोग एक साथ मिलकर भी नहीं उठा पाते थे। फूल की भांति उठा लिया और उससे अपनी गेंद पेड़ की डाली से नीचे उतार ली। यह दृश्य देखकर सीता जी के पिता राजा जनक जी ने यह प्रतिज्ञा की, कि जो भी योग्य और बलशाली इस धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा चढ़ायेगा, उस पुरुष से ही वह अपनी पुत्री जानकी जी का विवाह करेंगे ।

जानकी जी दया करुणा परोपकार के गुणों से परिपूर्ण थी वे प्रभात बेला में विहग समुदाय को चारा देती थी। कपोत शावकों को बिखरे हुए चावल से तृप्त करती थी।धीरे-धीरे कन्या जानकी यौवन की और अग्रसर हो गई, और वह पाक कला, चित्रकला इत्यादि में प्रवीण हो गई। सीता में लज्जा शीलता, गंभीरता के गुणों का प्रस्फुटन हो गया। सीता स्वभाव से शांत, गंभीर और एकाकी प्रिय थी। अत्यंत सुंदरी और सौंदर्य से परिपूर्ण थी।

युवावस्था में आने पर राजा जनक ने सीता जी के स्वयंवर का आयोजन किया। उसी समय अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ, वन में उनके यज्ञ की रखवाली करने हेतु आए थे। राजा जनक की ओर से विश्वामित्र को को स्वयंवर हेतु बुलावा आया ,तो वह लोग भी स्वयंवर में पहुंच गए। गुरु की आज्ञा से दोनों कुमार पुष्प चयनार्थ पुष्प वाटिका में भ्रमण हेतु जाते हैं। इस वाटिका में ही रघुराज का सुप्रिया जानकी से प्रथम संगम होता है। जानकी वहां पर गिरिजा पूजन हेतु अपने साथियों के साथ आई थी, और मन ही मन राम और जानकी एक दूसरे के हो जाते हैं। तत्पश्चात स्वयंवर में विभिन्न राजा अपने बल से शिव जी के धनुष को तोड़ने का प्रयत्न करते हैं, परंतु अंत में राघव धनुष को उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाते हैं, एक घोर निनाद होता है, और धनुष दो टुकड़ों में टूट जाता है। विवाह संपन्न होने के पश्चात सीता अपने पति के साथ अयोध्या में प्रवेश करती हैं। कुछ समय पश्चात राजा दशरथ राम जी के अभिषेक की तैयारी करते हैं, और स्वयं अयोध्या का राज्य राम जी को देकर वन गमन की इच्छा प्रकट करते हैं। इसी बीच दशरथ की दूसरी रानी "कैकई" को उनकी दासी "मंथरा" कहती है कि, आपकी सौत राम की मां कौशल्या के बेटे को राज्य दिया जा रहा है और आप यहां आराम से बैठी हैं। ऐसी बातें सुनकर उसके हृदय में सौतिया डाँह उत्पन्न हो जाती है, और वह महाराजा दशरथ से अपने दो वचन मांग लेती हैं कि अयोध्या के राज सिंहासन पर मेरा पुत्र भरत बैठेगा और, राम वल्कल वसन पहन कर चौदह वर्ष के लिए वनवास को जाएंगे।

महाराज दशरथ यह सुनकर अत्यंत दुखी हो जाते हैं, और जब राम को इस बात का पता चलता है तो, वह पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन को चले जाते हैं। वन गमन के उपरांत पिता दशरथ का देहावसान हो जाता है।

वन में जाकर वे दंडकारण्य वन में रहने लगते हैं। ऋषि मुनियों की रक्षा करते हैं और सेवा करते हैं। राम और लक्ष्मण के रूप को देखकर रावण की बहन शूर्पणखा उन पर मोहित हो जाती है, और विवाह का प्रस्ताव रखती है। जिसे सुनकर लक्ष्मण उनकी हँसी उड़ाते हैं, तो वह क्रोधित हो जाती है और अनर्गल प्रलाप करती है, तो लक्ष्मण जी उसके नाक कान काट देते हैं । शूर्पणखा क्रोधित होकर अपने भाई रावण के पास जाती है, सारी बात बताती है और अपने रक्षा का और अपमान का बदला लेने का भाई से वचन मांगती है।

रावण मारीच को स्वर्ण मृग बनकर वहां जाने को कहते हैं। सीता स्वर्ण मृग को देखती है तो, राम जी को स्वर्ण मृग लाने के लिए प्रेरित करती हैं। रामजी मृग के पीछे जाते हैं और लक्ष्मण से सीता जी की रक्षा करने को कहते हैं। थोड़ी ही देर में राम के मुख से "हे! लक्ष्मण" की आवाज सुनकर सीता जी डर जाती

हैं, और लक्ष्मण से जाकर कहती हैं कि- "वह जाएं और देख कर आए कि बड़े भाई किसी विपत्ति में तो नहीं है।" लक्ष्मण अपनी भाभी को बहुत प्रकार से समझाते हैं, पर सीता नहीं मानती तो लक्ष्मण कुटिया के सामने लक्ष्मण रेखा खींच कर कहते हैं कि-"आप इस रेखा को पार मत कीजिएगा", और जिस दिशा में राम गए थे उस ओर चले जाते हैं । थोड़ी देर में रावण वहां आता है और भिक्षा मांगने के बहाने सीता को लक्ष्मण रेखा पार करने को कहता है। जैसे ही सीता लक्ष्मण रेखा पार करके भिक्षा देने आती हैं तो, वह उनका अपहरण करके ले जाता है । राम लक्ष्मण के साथ वापस लौटते हैं और कुटिया में सीता को ना पाकर उनके विरह में व्याकुल हो जाते हैं। पूरे वन में उन्हें ढूंढते फिरते हैं। तब जटायु बताता है कि "रावण, सीता का हरण करके दक्षिण दिशा की ओर ले गया है।"

तत्पश्चात राम की हनुमान से मुलाकात होती है और हनुमान जी की सहायता से लंका में सीता के होने का पता चलता है। रावण और राम का भीषण युद्ध होता है जिसमें राम की विजय होती है। राम लंका का राज्य रावण के भाई विभीषण को देते हैं ।

जब युद्ध के पश्चात सीता, राम के सम्मुख आते हैं, तो वे लोक लाज के भय से सीता को, अपने सत्य के प्रमाण स्वरूप अग्नि परीक्षा देने को कहते हैं। अग्नि परीक्षा मैं स्वयं अग्नि देव, सीता के सतित्व का प्रमाण देकर, उन्हें राम को सौंप देते हैं ।

राम सीता को लेकर अयोध्या पहुंचते हैं और रामराज्य स्थापित करते हैं ।तत्पश्चात एक धोबी के द्वारा सीता जी के चरित्र पर उंगली उठाए जाने के ,वार्तालाप को सुन कर राजाराम सीता जी को, लक्ष्मण जी के द्वारा, वन में छुड़वा देते हैं। उस समय सीता गर्भवती थी। बाल्मीकि जी के आश्रम में दो पुत्रों लव और कुश को जन्म देती हैं, और उनका पालन पोषण करती हैं। समाज और पति के इस व्यवहार से क्षुब्ध सीता अंत में, अपनी माता वसुंधरा की गोद में समाहित हो जाती हैं।

सीता की अग्नि परीक्षा और, परित्याग सदा से ही विवाद का विषय रहा है। तुलसी ने राम को रामचरितमानस में, इस विवाद से मुक्त करने हेतु, रावण हरण से पहले सीता को अग्नि को समर्पित करने की बात कही है ,और फिर रावण युद्ध के बाद सीता को पुनः अग्नि से प्राप्त करने की कथा कही है।

आधुनिक युग में, जब परिवारों में बिखराव बढ़ रहा है, क्षमा शीलता, लज्जा शीलता को ताक पर रखकर महिलाएँ आधुनिकता के नाम पर,परिवार की सीमाओं का उल्लंघन कर रही हैं, और संयुक्त परिवार बिखराव के कारण क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। सीता का चरित्र एक उदाहरण है। जो दर्शाता है कि उन्होंने किस तरह से लज्जा शीलता, क्षमाशीलता ,परस्पर सामंजस्य, साहस, धैर्य के द्वारा विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी, परिवार को सामंजस्य के रखा है।

<u>सौंदर्य से परिपूर्णः-</u> सीता एक सुंदर, शालीन, आदर्श पत्नी है। सीता सौंदर्य से परिपूर्ण है। अति सुंदर हैं। सीता के सौंदर्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी ने कहा है,-

सुंदरता कहूं सुंदर करई।
छवि गृह दीपसिखा जनु बरई।
सब उपमा कवि रहे जो जुठारी।
केहीं पटतरों विदेह कुमारी।।[4]
सिय शोभा नहीं जाए बखानी ।
जगदंबिका रूप गुण खानी।।
उपमा सकल मोह लघु लागी।
प्राकृत नारि अंग अनुरागी।। [5]
सिय वरनिऊँ तेई उपमा देई।
कुकवि कहाइ अपजस को लेही।
जो पटतरई सीय सम सिया।
जग अस जुबति कहां कमनियां।।[6]
गिरा मुखर तन अरध भवानी।
रति अति दुखद अतनु पति जानी।

विष बारूनि बंधु प्रिय जेही।
कहिय रमा सम किमि वैदेही।।[7]
"यही विधि उपजे लच्छी जब, सुंदरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कवि, करहि सीय समतूल।।"[8]

लज्जा शीलः- सीता लज्जा शीलता की मूर्ति है। पुष्प वाटिका में जब राम से छोटी सी मुलाकात होती है तो, सीता पहले तो उन्हें देखती हैं, पर फिर लज्जा वश अपने नैन झुका लेती हैं। लज्जा नारी का आभूषण होता है। सीता उसे सार्थक करती दिखाई देती हैं।

लता ओट तब सखिन्ह लखाए।
श्यामल गौर किशोर सुहाए।।
देखी रूप लोचन ललचाने।
हरषे जनु निष्न निधि पहिचाने।।[9]
तासु बचन अति सियही सोहाने।
दरसन लाग लोचन अकुलाने।
चली अग्र कर प्रिय सखी सोई।
प्रीत पुरातन लखई ना कोई ।।[10]
"सुमिर सीय नारद वचन ,उपजी प्रीत पुनीत ।
चित्र विलोकत सकल दिसी,जनु शिशु मृगी सभीत"।।[11]

संस्कारवानः- सीताजी संस्कारों से परिपूर्ण है। वे अपने माता के द्वारा, दी गई सारी शिक्षाओं को, अपनी गाँठ में बाँधकर ससुराल ले जातीं हैं, और जीवन भर उनका पालन करती हैं। वे दया शील, साहसी, क्षमावान, प्रेम से परिपूर्ण ओजस्विनी नारी हैं। सास ससुर की सेवा कैसे करना है, पति के कार्यों का ध्यान कैसे रखना है, अपने से छोटों के साथ कैसा व्यवहार करना है, यह सभी संस्कार उनमें कूट-कूट कर भरे हैं।

गूढ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयहूं विलंब मातु भय मानी।।
धरी बड़ी धीर राम उर आने। फिरी अपनपउ पितु बस माने।।[12]
देखन मिस मृग विहग तरु, फिरई बहोरि बहोरि।।
निरखि निरखि रघुवीर छवि, बाढई प्रीति ना थोरि।।[13]
मोर मनोरथ जानहु नीके। बसहुँ सदा उर पुर सबही के।
किन्हेंऊँ प्रगट न कारण तेही। असि कह चरण गहे वैदेही।।[14]

संकोचीः- "पुनि पुनि रामहि चितव सिय, सकुचति मनु सकुचैन।
हरत मनोहर मीन छवि, प्रेम पियासे नैन।"[15]

पुष्प वाटिका में वह राम को, नयन भर देखना चाहती हैं, परंतु संकोच के कारण बार-बार उन्हें देखकर, फिर आंखें नीची कर लेती हैं। उनके नयन राम की मनोहर छवि को, देखने के लिए आतुर हैं, और प्यासे हैं, परंतु संकोचबस वह उन्हें नयन भर देख नहीं पाती हैं।

शक्ति स्वरूपाः- सीता शक्ति स्वरूपा है। शिवजी का धनुष जिसे कोई नहीं उठा सकता था। वह हल्के में ही उठाकर उससे अपनी गेंद निकाल लेती हैं। शक्ति स्वरूपा होने का परिचय देती हैं।

सखिन मध्य सोहत सिय कैसे।
छवि गण मध्य महा छवि जैसे।।[16]

साहसीः- लंका में अनभिज्ञ एकाकी होकर भी सीता आत्म संयम नहीं होती। अशोक वाटिका में बार-बार प्रणय निवेदन पर ,वह पतिव्रता अपने पति का ही ध्यान करती रहती हैं, और रावण को ठुकरा कर, उसका तिरस्कार करती हैं। रावण की लंका में अशोक वाटिका में साहस के साथ रहती हैं, और श्री राम को अपने मन में बसा कर निरंतर उनका ध्यान करती रहती हैं।

धैर्यवानः- जीवन में हर विपरीत परिस्थितियों का सीता धैर्य के साथ सामना करती हैं। वन गमन में पति के साथ धैर्य से कष्टों का सामना करती हैं। स्वयंवर के समय जब राम धनुष को उठाने के लिए आगे बढ़ते हैं तो उनकी व्याकुलता बढ़ जाती है जिसका वर्णन तुलसीदास जी ने इस प्रकार किया है

सकुची व्याकुलता बड़ी जानी ।
धरी धीरज प्रति और है आनी।।[17]

सहनशीलः- सीता बहुत सहनशील हैं। चौदह वर्ष वनवास के, कष्ट कंटक और परेशानियों को, हँस-हँसकर के अपने प्रियतम के साथ झेलती जाती हैं, और कभी किसी से कोई उलाहना नहीं देती हैं। पति का राज्याभिषेक ना होने पर, उसके स्थान पर उन्हें बनवास मिलने पर, वह कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करती, और पति का अनुगमन करते हुए, वन को चली जाती हैं। पति द्वारा अग्नि परीक्षा, और गर्भावस्था में परित्याग करने पर भी, पति के विरुद्ध, एक शब्द भी सुनना नहीं चाहती हैं, और अपना क्रोध प्रगट ना करके, सहनशील बनी रहती हैं।

विवेक वानः- सीता अत्यधिक विवेकवान है। पति के द्वारा परित्याग कर दिए जाने के बाद, जब लक्ष्मण उन्हें बताते हैं कि, राम ने उनका परिचय आ कर दिया है। तो सीता सोचती हैं कि ,अपना जीवन नदी में कूदकर समाप्त कर लें, परंतु जब ध्यान आता है कि उनके गर्भ में शिशु पल रहे हैं, तो वह विवेक से काम ले कर, वाल्मीकि के आश्रम में आश्रय लेती हैं, और अपने दोनों बच्चों को जन्म देकर ,उनका नैतिक मूल्यों के साथ पालन पोषण करती हैं।

वाकपटुः- सीता में वाकपटुता का गुण है। जब राम वन गमन से पहले वन की कठिनाइयों से अवगत कराते हैं , और घर पर रहकर माता-पिता की सेवा करने को कहते हैं तो, सीता अपनी वाकपटुता से स्वयं को, पति के साथ वन ले जाने के लिए राजी कर लेती हैं।
लंका की अशोक वाटिका में, जब रावण उन्हें अपनी, साम्राज्ञी बनाने का लोभ देता है। तो वह विभिन्न उदाहरणों से उसे धिक्कारती हैं, और नतमस्तक कर देती हैं।

सुन दसमुख खद्योत प्रकासा।
कबहुं कि नलिनी करिय विकासा।।
आसन समझ कहत जानकी ।
खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ।।[18]
शठ सूने हरि आनहीं मोहि ।
अधम निल्लज लाज नहीं तोहि।।[19]

पति परायणः- पति के द्वारा दो बार, परित्याग करने के बाद भी, वे पति की बुराई नहीं सुनना चाहती। जब बाल्मीकि आश्रम में उनकी सखियाँ, राम की बुराई करती हैं, तो वे अपने कानों पर हाथ रख लेती हैं। पति की सेवा को ही वे। नारी का एकमात्र धर्म मानती हैं।

जेहिं विरंचि रचि सिय सँवारी।
तेहिं श्यामल वर रचेऊँ बिचारी।।[20]

सीता का अनुकरणीय चरित्र, वर्तमान संदर्भ में, प्रत्येक घर में आवश्यकता की, प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए, राघव प्रिया सीता, नारी जगत में अपने पतिव्रत धर्म के कारण वंदनीय है। पति ही स्त्री का सबसे बड़ा आभूषण है।
जब हनुमान अशोक वाटिका में, सीता को देखते हैं तो कह उठते हैं, कि पति के बिना नारी, भूषण के साथ भी शोभायमान नहीं होती है। सीता की जितनी शोभा होना चाहिए, वैसी नहीं दिखाई देती है।

भर्ता नाम परं नार्याः ,शोभनम् भूषणादपि।
एषाही रहिता तेन शोभनहिं न शोभते ।।[21]

सीता गिरजा से प्रार्थना करती हैं कि, मुझे रघुवीर की दासी बना दीजिए ,और जिस का जिस पर सत्य स्नेह हो वह उसे मिलता ही है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

तौ भगवान सकल उरवासी।
करहु मोहि रघुवर के दासी ।।
जेहीं के जेहीं पर सत्य सनेहूँ।
सो तेहि मिलय न कछु संदेहूँ।।[22]

कोमलः- जब सीता अपनी सास कौशल्या से, वन जाने की आज्ञा मांगती हैं, तो वे कहती हैं, सीता बहुत कोमल है। वह सदा पलंग और हिंडोले में बैठी हैं। कभी उन्होंने कठोर भूमि पर पांव नहीं रखे हैं। वह जोगन बन कर वन में कैसे जाएंगी। मैंने तो सीता से कभी दिए की बातें खिसकाने को भी नहीं कहा।

पलंग पीठ तजि गोद हिंडोंरा।
सिय ना दिन पगु अबनि कठोरा।
जिए न मूरि जिमि जोगवत रहाऊँ।
दीप बाति नहीं टारन कहऊँ।[23]
सोई सिय चलन चहत वन साथा ।
आयसु काय होए रघुनाथा।। [24]

कौशल्या कहती हैं सीता वन में कैसे रह पाएंगी। वह तो चित्र में बने हुए बंदर को देख कर भी डर जाती है।

सिय बन बसहि तात केंहि भाँतिं।
चित्र लिखित कपि देख डेरातिं।।[25]

ओजस्वी क्षत्राणीः- ओजस्वी क्षत्राणी के समान सीता साहस व आत्मविश्वास का परिचय देती हैं। रावण के व्यवहार की भर्त्सना कर रावण को पापाचारी, चपल इंद्रिय, सदाचार शून्य आदि उपाधियाँ देते हुए उसको लज्जित करती हैं। रावण के सामने अपने, ओजस्वी पति राम के गुणों का गान करती है। रावण तलवार लेकर उन्हें मारने दौड़ता है, पर वह तनिक भी विचलित नहीं होती हैं।

धार्मिकः- वे धर्म को ही संसार का सार बताती हैं। सब ऋषियों की व्यथा गाथा को सुनकर, राम गहन कान्तार में प्रविष्ट होते हैं, और राक्षसों के वध की प्रतिज्ञा करते हैं, तो सीता राम की प्रतिज्ञा सुनकर, उपदेश देते हुए कहती हैं कि, बिना बैर के दूसरों के प्रति क्रूर बर्ताव करना महा पातक है। धर्म पालन हेतु वन में प्रस्तुत आपको, उसका सर्वथा परित्याग करना चाहिए।

"क्षत्रियानामिह धनुर्हुतास्येन्धतानि च।
समीपतः स्थितं तेजोबलमुच्छ्रयते भृशम्।।[26]
"धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात् प्रभावते सुखम्।
धर्मेंण लभते सर्वम्, धर्मसार मिदम् जगत ।।[27]
धर्म पर चलने वाली और ,धर्म की रक्षा करने वाली एक धार्मिक नारी हैं।

संवेदनशीलः- पति के अतिरिक्त अन्य लोगों के ,प्रति भी संवेदनशील हैं। वनगमन के अवसर पर लक्ष्मण से बोली की, प्रियतम राम तो पिता की आज्ञा से घर छोड़कर जा रहे हैं। पर आप एक त्यागी, तपस्वी की भांति क्यों घर छोड़कर जा रहे हैं ।

यह पिता की आशा से, आज्ञा से घर छोड़ चले ।
पर देवर तुम त्यागी बनकर, क्यों घर से मुंह मोड़ चले।।[28]

सीता के हृदय की विशाल चेतना, तथा संवेदनशीलता का प्रमाण है ।

प्रकृति से स्नेहः- पंचवटी खंडकाव्य में, वह नगरीय जीवन से दूर, प्राकृतिक सुषमा में, अपने पति राम के साथ रहने को ही, जीवन की श्रेष्ठ पूंजी मानती हैं। वनवास की अवधि पूर्ण होने पर, सीता के मन में,

उत्सुकता का भाव नहीं रहता है। वह अपने पति राम से ,स्वच्छंद एवं सादगी पूर्ण जीवन, की श्रेष्ठता को व्यक्त करती हैं।

श्रम शीलः– अकर्मण्यता मनुष्य को, अधिकारों से वंचित करती है। सीता मनुष्य को, कर्मशील होने का संदेश देती हैं। पंचवटी में उनके हाथ में खुरपी, तथा कुदाली प्रदान की है। इस प्रकार सीता, स्वाबलंबी समाज की नारी बनकर, वन में रहती हैं।

लक्ष्मण जी ने कहा है,-

अपने पौधों में भाभी जब, भर कर पानी देती ।
खुरपी लेकर आप निराती, जब से अपनी खेती।।[29]

दुर्भाग्य से प्रताड़ितः– सीता का जीवन कष्टों से भरा पड़ा है। जन्म भी कष्ट पूर्ण, विवाह भी कष्ट पूर्ण, विवाह के बाद का जीवन भी कष्ट पूर्ण, वनवास ,हरण ,रावण गृह निवास, अग्नि परीक्षा ,फिर परित्याग ,वनवास सीता करुणा की प्रतिमूर्ति हैं।

आदर्श बेटीः– जानकी एक आदर्श बेटी है। घर पर वह सदा माता पिता को सुख देती आई हैं। जब विदा होती हैं तो माँ गोद में बैठा कर जो भी बातें समझाती है, वे जीवन पर्यंत उनका पालन करती हैं। मां सीता को गोद में बैठाकर आशीष देती हैं। सदा पति को प्यारी रहो और तुम्हारा सुहाग सदा बना रहे।

पुनि पुनि सीय गोद कर लेही।
देई असीस सिखावन देही।
होएहुँ संतत पियहि पियारी।
चिरु अहिबात असीस हमारी।। [30]

सास ,ससुर और गुरु की सदा सेवा करना, और पति के रुख को देखकर, आज्ञा का पालन करना।

सास ससुर गुरु सेवा करहूं।
पति रुख लखि आयसु अनुसरहूं।।[31]

सीता जी की विदाई पर ,उनके पिता जनक की करुण दशा का वर्णन, तुलसीदास जी ने इस प्रकार किया है–

सिय बिलोक धीरता भागी।
रहे कहावत परम विरागी।
लिन्ह राय उर लाइ जानकी ।
मिटि महामरजाद ज्ञान की।।[32]

आदर्श पत्नीः–

जिय बिनु देह नदी बिनु वारी।
तैसइ नाथ पुरुष बिनु नारी।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे।
शरद विमल विधु बदन निहारे।।[33]

राघव से विवाह के पश्चात सीता, पति परायण रही हैं। वे जीवन भर, पति की छाया बनकर साथ रहना चाहती हैं।

इसलिए सुकुमार होते हुए भी, चौदह वर्ष के वनवास पर, पति के साथ स्वेच्छा से, जाना तय करती हैं। वन के कष्ट कंटक सहती हैं।

रावण द्वारा अपहरण कर लिए जाने के पश्चात, अपने सतीत्व की रक्षा करते हुए, लंका में अशोक वाटिका में निरंतर पति का ध्यान करती रहती हैं, और जब युद्ध के पश्चात रावण का वध हो जाता है, और राम उन्हें अग्नि परीक्षा देने वो कहते हैं, अग्नि परीक्षा देने के बाद , हृदय से शुद्ध होने के बाद भी अपने पति के साथ अयोध्या वापस आती हैं। उसके बाद राम पुनः उनका गर्भावस्था की स्थिति में, परित्याग कर वन में भेज देते हैं, तो भी कभी पति की निंदा, नहीं सुनना चाहती हैं। जब उनके सुकुमार लव कुश, पिता को पकड़कर उनके सामने लाते हैं तो, सीता मूर्छित हो जाती हैं। जीवन भर पति परायण रहकर अंत में अपनी मां वसुंधरा की गोद में समा जाती हैं।

आदर्श माँ- पति द्वारा परित्याग कर दिए जाने पर ,वन में छोड़ते समय जब लक्ष्मण उन्हें बताते हैं की, राम ने उनका परित्याग कर दिया है, तो सीता नदी में डूब कर, अपने प्राण देना चाहती हैं। परंतु स्वयं को गर्भवती होने के कारण, वे गर्भ में पल रहे उन जीवो की, हत्या नहीं करना चाहती हैं, इसलिए जाकर वाल्मीकि के, आश्रम में शरण लेती हैं। दोनों पुत्रों को अपने परिवार से दूर रहकर ,जन्म देतीं हैं। साहस और धैर्य के साथ, नैतिक मूल्यों के साथ ,उनका यथोचित पालन पोषण करती हैं। अपने जीवन के दुख को, कभी बालकों के सामने प्रकट नहीं करतीं, कि वे अपने पिता से घृणा ना करने लगे।

आदर्श नारीः- भोग रोग सम भूषण भारू ।
जम जातना सरिस संसारू।।
प्राणनाथ तुम बिन जग माही ।
मौको सुखद कतहु कछु नाही।।[3]

सीता एक आदर्श नारी है। एक आदर्श नारी की कसौटी पर सीता हर जगह खरी उतरती हैं। पति की अनुगामिनी है। महलों की सुकुमारी होने के बाद भी, वे पति के साथ सहर्ष वन को चली गई थी। सदा सत्य, साहस का परिचय देती हैं। पति द्वारा अग्नि परीक्षा देने को भी, वह तैयार हो जाती हैं, क्योंकि उनका चरित्र निष्कलंक था। पति के द्वारा परित्याग कर देने के बाद भी, वे अपने मन में पति के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखती हैं।

जीवन के हर दुख को धैर्य के साथ सहती हैं। कभी पति की इच्छा के लिए अग्नि परीक्षा देती हैं, तो कभी प्रजा के कारण राज्य से निर्वासित की जाती हैं। लक्ष्मण रेखा बनाते समय और गर्भवती हालत में वन में छोड़ते समय लक्ष्मण को उपालंभ देती हैं, पर अपनी सीमा में रहकर।

एक आदर्श नारी बनने के लिए कितना कुछ धैर्य के साथ सहना होता है। यह सीता के चरित्र से अनुकरण करने योग्य है।

"If sita's character was a weak one why people so divers as Indian and East Asians adore as the greatest icon of their lives? from Thailand to Louse. Janki's characterization in Literature and in temples has inspired generations her strength and inner integrity have led great poets to admire her and write poems to her glory".[35]

अग्नि परीक्षा के समय, वे अग्नि देव से प्रार्थना करतीं हैं, कि यदि मन क्रम वचन से मैंने, कभी राघव के अतिरिक्त किसी का भी स्मरण किया हो, तो आप मुझे अपने आगोश में ले लें, नहीं तो आप मुझे श्रीखंड के समान प्रतीत हो।

जौ मन बच क्रम मम उर माहीं।
तजि रघुवीर आन गति नाहीं।।
तौ कृषानु सबके गति जाना।
मौ कहुं होऊ श्रीखंड समाना।।[3]

निष्कर्षः- सीता परम तेजस्विनी, स्वाभिमाननी नायिका है। सीता धीर ,गंभीर, साहसी ,पतिव्रता नारी सुलभ सुसंस्कारों से सुसज्जित ,एक तेजस्वी नारी हैं ।जो भारतीय संस्कृति में नारी गरिमा को नूतन आयाम प्रदान करती हैं। कुछ विवादों को यदि छोड़ दिया जाए तो, सीता संपूर्ण विश्व के, हिंदू समाज में एक आदर्श, और पूजनीय नारी हैं ।जिनके चरित्र का अनुसरण करके ,कोई भी नारी अपने परिवार को, बाँध कर रखने में सदा सक्षम हो पाएगी।

संदर्भ सूचीः-

क्र.	ग्रंथ का नाम	रचयिता का नाम	पृष्ठ संख्या
1)	जानकी जीवनम्	डॉक्टर अभिराज राजेंद्र मिश्रा	पेज क्र.18/67
2)	मनुस्मृति		3/36
3)	जानकी जीवनम	डॉक्टर अभिराज राजेंद्र मिश्रा	1/ 48

4) रामचरितमानस बाल कांड तुलसीदास 210
5) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 224
6) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 224
7) रामचरितमानस बाल कांड तुलसीदास 224
8) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 225 दोहा क्र. 247
9) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 211
10) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 209
11) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 209
12) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 213
13) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 213
14) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 214
15) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 295
16) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 239
17) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 234
18) रामचरितमानस सुंदरकांड तुलसीदास 706
19) रामचरितमानस सुंदरकांड तुलसीदास 707
20) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 204
21) रामायण सुंदरकांड वाल्मीकि 1/ 113
22) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 235
23) रामचरितमानस अयोध्या कांड 370
24) रामचरितमानस अयोध्या कांड 370
25) रामचरितमानस अयोध्या कांड 370
26) रामायण अरण्य कांड वाल्मीकि 9/15
27) रामायण अरण्य कांड वाल्मीकि 9/30
28) पंचवटी मैथिलीशरण गुप्त 02
29) पंचवटी मैथिलीशरण गुप्त 07
30) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 302
31) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 302
32) रामचरितमानस बालकांड तुलसीदास 306
33) रामचरितमानस अयोध्या कांड तुलसीदास 381
34) रामचरितमानस अयोध्या कांड तुलसीदास 381
35) In search of sita-Rivisiting Mythology Malashrilal & Namita Goghle 25
36) रामचरितमानस लंका कांड तुलसीदास 781 ये गांव मेरा